स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड (महाराष्ट्र)

शोध विषय

‘इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक की आंबेडकरवादी कविताओं का मूल्यांकन’

पीएच.डी. (हिंदी) उपाधि के लिए पंजीकरण
हेतु शोध – प्रबंध की रूपरेखा

शोध – छात्र
प्रा. रगडे परसराम रामजी
शंकरराव जगताप आर्टस् ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज,वाघोली
त. कोरेगांव जि. सातारा

शोध निर्देशक
डॉ. लक्ष्मण तुळशीराम काळे
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
राजीव गांधी महाविद्यालय, मुदखेड जि. नांदेड

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड (महाराष्ट्र)

ऐप्रिल 2019

पीएच. डी.(हिंदी) उपाधि के लिए पंजीकरण हेतु शोध – प्रबंध की रूपरेखा

नामः

प्रा. रगडे परसराम रामजी

शंकरराव जगताप आर्टस् ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज,वाघोली

त. कोरेगांव जि. सातारा – 415525 (महाराष्ट्र)

स्थायी पताः

प्रा. रगडे परसराम रामजी

ग्राम : असर्जन

त.जि : नांदेड

पिन : 431606

भ्रमणध्वनि : 9850492933

ई– मेल : ragaderp@gmail.com

पत्राचार पताः

प्रा. रगडे परसराम रामजी

ग्रामः असर्जन

त.जि : नांदेड

पिन : 431606

ई– मेल : ragaderp@gmail.com

मार्गदर्शक का नाम तथा पताः

डॉ. लक्ष्मण तुळशीराम काळे

अध्यक्ष, हिंदी विभाग

राजीव गांधी महाविद्यालय, मुदखेड

जि. नांदेड

भ्रमणध्वनि : 9766566705

ई – मेल : kalelaxmant1975@gmail.com

शोध प्रबंध का शीर्षक

''इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक की आंबेडकरवादी कविताओं का मुल्यांकन''

प्रष्ठभूमि तथा विषय चयन–

साहित्य को समाज का 'दर्पण' माना जाता है। समाज प्रबोधन एवं परिवर्तन में साहित्य की अहम् भूमिका रही है। वही समाज सर्वश्रेष्ठ बनेगा जिसकी नींव संस्कारमय साहित्य है। भारतीय संस्कृति विश्वबंधुता का संदेश देनेवाली है, परंतु समाज रचना जाति, वर्ण, वर्ग पर आधारित होने के कारण सामाजिक एकता की नींव कमजोर बनी है। संत साहित्य, समाजसुधारकों ने इसी समाज रचना का विरोध करके सभी मानव एक है का संदेश दिया। आधुनिक युग में भारतेंदु युग, महावीर प्रसाद द्विवेदी युग एवं छायावादी युग के बाद कवियों ने कविता को नई दिशा देने का प्रयास किया। सन 1980 के बाद डॉ. बाबासाहब आंबेडकर विचारों के कारण हिंदी कविताओं की दिशा ही बदल गई। उनके विचारों के कारण, कविता हाशिए से दूर लोगों के साथ जुडने लगी। विशेषतः कविता विधा समाज जीवन से जुडी होने के कारण मुझे पहले से इसमें विशेष रूचि रही हैं। यही कारण है, कि मैंने पीएच.डी. शोधकार्य के लिए कविता विधा पर अनुसंधान करने का विचार किया।

साहित्य की अन्य विधाओं में कविता का अनन्य साधारण महत्व है। कम शब्दों के माध्यम से अधिक – से – अधिक अपनी भावनाओं को कवि व्यक्त करता है। मैंने कुछ कविता संग्रहों का अध्ययन किया। उनमें कवि दामोदर मोरे की 'सदियों के बहते जख्म', 'पलके सुलग रही है', रजनी तिलक का 'पद्चाप' लक्ष्मीनारायण सुधाकर का 'वामन फिर आ रहा है' उल्लेखनीय कविता संग्रह है जो, आंबेडकरवादी विचारधारा से प्रभावित है। साथ ही 'दो पंक्तियों के बीच' राजेश जोशी, 'दिल पत्थर के बनाये हुए है' सं. संतराम देशमुख आदि कवि एवं कविता संग्रह आंबेडकरवादी विचारों से प्रभावित है। अतः डॉ. लक्ष्मण तुळशीराम काळे जी से विचार–विमर्श किया और ''इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक की आंबेडकरवादी कविताओं का मुल्यांकन'' विषय का चयन किया।

विषय का महत्वः—

इक्कींसवी सदी की कविताओं के माध्यम से समकालीन समस्याओं को सामने लाने का प्रयास किया है। उनमें अधिकत्तर कविता में जीवन के नए दबाव, सामाजिक रिश्तों में बदलाव के प्रतिफलन के कारण नए — नए भावालोक, नए — नए जीवनानुभावों और जीवनानुभूतियों की अभिव्यक्ति हुई है। कुछ ऐसी भी कविताएँ है जिनमें कवि उदात्त एवं महान आदर्श और उच्चभावनाओं से परिसीमित नही है, बल्कि अपनी परिधि में जनसाधारण की भावदशाओं, आकाशाओं, प्रेरणाओं और प्रश्नाकुल समस्याओं का चित्रण करने में सफल रहें है।

इक्कींसवीं सदी की कविता विधा में आंबेडकरवादी विचारों से प्रभावित कविताओं में अंधविश्वास, मूल्यहिनता, धर्म के नाम की जानेवाली ढगाई, स्वार्थी राजनीति, अमानवीय और भयावह तंत्र में पीसते, छटपटाते आम आदमी की यातना, शोषण, वर्ग संघर्ष, गुटबाजी तथा बदलते स्त्री—पुरूष संबंध, विषम और तनावपूर्ण दाम्पत्य जीवन आदि का चित्रण दिखाई देता है। अतः इन बदलते संबंधों के साथ बदलते मनुष्य के विचारों को देखकर मेरे मन में जो प्रश्न उठे उन्हें लेकर प्रस्तुत विषय का चयन किया।

पूर्ववर्तो शोधकार्यः—

मेरी जानकारी के अनुसार 'इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक की आंबेडकरवादी कविताओं का मुल्यांकन' इस शीर्षक से किसी भी विश्वविद्यालय में एम. फिल एवं पीएच.डी उपाधि हेतु शोध कार्य नहीं हुआ। प्रस्तुत विषय इस अभाव की पूर्ति की दृष्टि से विनम्र प्रयास है।

आज कई शोध—छात्र है, जो इस दृष्टि से शोधकार्य करने की इच्छा रखते है। अलग—अलग दृष्टिकोन से शोध—प्रबंधों का निर्माण हो रहा है। निम्नांकित रूप से उन शोध—प्रबंधों को देखा जा सकता है, जो आंबेडकरवादी विचारधारा से संबंधित है—

1) समकालीन हिंदी कहानी में गैर दलितोंओं का दलित विषयक लेखन

आंबेडकरवादी चिंतन के विशेष संदर्भ में

शोधछात्र — प्रसाद गोविंद

निर्देशक – राम दिनेश

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, पीएच.डी. 2003

2) हिंदी की दलित काव्य परंपरा और समकालीन कविता का अनुशीलन

शोधछात्र – मकवाना जितेंद्रकुमार

निर्देशक – परमार एन. एस

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बडोदा पीएच.डी. 2016

3) आधुनिक हिंदी कविता में दलित वर्ग का चित्रण

शोधछात्र – आनंद वास्कर

निर्देशक – सुरजप्रसाद मिश्र

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर. पीएच.डी. 1980

4) हिंदी और मराठी दलित कथासहित्य का तुलनात्मक अनुशीलन

शोधछात्र – वनमाला भाविस्कर

निर्देशक – परमार एन. एस

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बडोदा पीएच.डी. 2016

5) हिंदी में दलित रचनाकारों की आत्मकथाएँ और भारतीय सांस्कृतिक परिवेश का संदर्भ

शोधछात्र – सत नारायण

निर्देशक – रविकुमार 'अनु'

पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला पीएच.डी. 2011

अनुसंधान का उद्देश्यः–

1) इक्कीसवी सदी के परिप्रेक्ष्य में आंबेडकरवादी विचारों से परिचित होना।

2) इक्कीसवी सदी की कविताओं में आंबेडकरवादी विचारों का महत्व तथा योगदान का

अध्ययन करना।

3) आंबेडकरवादी कविताओं का सामाजिक परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन करना।

4) आंबेडकरवादी कविताओं का राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन करना।

5) आंबेडकरवादी कविताओं का धार्मिक परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन करना।

6) आंबेडकरवादी कविताओं का सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन करना।

7) आंबेडकरवादी विचारधारा के परिप्रेक्ष्य में विविध पक्षों का अध्ययन करना।

8) इक्कीसवी सदी की कविताओं पर आंबेडकरवादी विचारधारा के प्रभाव का अध्ययन करना।

9) इक्कीसवी सदी की कविताओं में आंबेडकरवादी विचारधारा के सौन्दर्यशास्त्र का अध्ययन करना।

शोधकार्य की उपायदेयताः–

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज के बिना वह जीवित नहीं रह सकता। इक्कींसवीं सदी, भूमंडलीकरण तथा बाजवाद से प्रभावित है। इक्कीसवीं सदी में वैज्ञानिक तथा तकनीकी क्रांती की शुरूआत होने के कारण मशीन मनुष्य का पर्याय बन रही है। हिंदी कविता विधा में मोहनदास नैमिशराय, श्यौराजसिंह बैचैन, ओमप्रकाश वाल्मीकि, जयप्रकाश कर्दम, रजनी तिलक, सुशीला टाकभौरे, दामोदर मोरे, संतराम देशमुख 'विमल', दादूलाल जोशी 'फरहद', सोहनलाल 'सुबुध्द', 'विपिन बिहारी', जसराम हरनोदिया, 'डॉ. कर्मशील भारती, 'प्रा. प्रकाश बच्छव' प्रमुख आंबेडकरवादी विचारों से प्रभावित माने जाते है। उनकी कविताओं ने आंबेडकरवादी विचारों के सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक पक्ष के साथ व्यक्तिगत पक्ष को भी सटीक ढंग से प्रस्तुत किया है। अतः मेरा प्रयास यही रहेगा कि कविता के प्रबोधनकारी अंगो के साथ हिंदी कविता में आंबेडकरवादी विचारों के प्रभावों को उद्घाटित करना और साहित्य के ऐसे पक्षों को उजागर करना, जो समाज को कर्मयोगी बना सके और ऐसे साफ–सुधरे समाज निर्माण तथा उन्नत राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके।

अनुसंधान की मर्यादा और व्यक्ति :–

कविता विधा में समाज प्रबोधन के साथ ही मनुष्य की समस्त संभावनाओं और प्रयासों का चित्रण होता है। किसी भी क्षेत्र में मनुष्य द्वारा किया गया कोई भी कार्य परिपूर्ण नहीं होता है। अतः प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में मैं अपनी तरफ से अपनी क्षमताओं के साथ न्याय करने का प्रयास करूँगा। चुने हुए विषय के अनुसार हम अपने अनुभवों एवं क्षमता के आधार पर 'इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक की आंबेडकरवादी कविताओं का मुल्यांकन' करेंगे।

अनुसंधान कार्य की योजना : **अध्याय विभाजन** (outline of Research work)

''इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक की आंबेडकरवादी कविताओं का मुल्यांकन''

प्रथम अध्याय : आंबेडकरवादी विचारः सिध्दांत एवं स्वरूप

प्रस्तुत अध्याय में आंबेडकरवाद की परिभाषा, आंबेडकरवाद शब्द का प्रयोग, आंबेडकरवाद का स्वरूप, विशेषताएँ आदि का विवेचन किया जाएगा। अध्ययन के अंत में निष्कर्ष दिए जाएँगे।

द्वितीय अध्याय : आंबेडकरवादी कवि और उनके कविता संग्रहों का परिचय

प्रस्तुत अध्याय में आंबेडकरवादी विचारों से प्रभावित कवि जयप्रकाश कदर्म, सुरजपाल चौहान, कर्मशील भारती, दामोदर मोरे, ओमप्रकाश वाल्मीकि, विपिन बिहारी आदि कवियों के परिचय के साथ उनके कविता संग्रहो का परिचय दिया जाएगा। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दर्ज किए जाएँगे।

तृतीय अध्याय : आंबेडकरवादी कविताओं का सामाजिक परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन

प्रस्तुत अध्याय में सामाजिक क्रांति की परिभाषा एवं स्वरूप को स्पष्ट करते हुए इक्कीसवीं सदी की कविताओं पर आंबेडकरवादी विचारों का प्रभाव को रेखांकित किया

जाएगा। सामाजिक क्रांति के विविध आयामों में समानता का प्रचार, देशप्रेम की भावना, अंधविश्वास का विरोध, वैज्ञानिकता का प्रचार, जातियता का विरोध, प्रगतिशीलता, नारी सम्मान आदि का विवेचन किया जाएगा। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दर्ज किए जाऍंगे।

चतुर्थ अध्याय : आंबेडकरवादी कविताओं का राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन

प्रस्तुत अध्याय राजनीतिक स्वार्थ लोलूपता, झूठे आश्वासन, कोरी घोषणाऍं साथ ही अवसरवादिता, छल–बल का प्रयोग, पुलिस तंत्र की बर्बरता, भ्रष्टाचार, शासन–प्रशासन आदि का विवेचन किया जाएगा। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दर्ज किए जाऍंगे।

पंचम अध्याय : आंबेडकरवादी कविताओं का धार्मिक परिप्रेक्ष्य में मुल्यांकन

प्रस्तुत अध्याय में आंबेडकरवादी विचारों के आधारपर धार्मिक आस्था, धार्मिक अंधविश्वास और विज्ञान, धर्म, पैसा, धार्मिक भ्रष्टाचार, धर्म के नाम पर बढ रहा व्याभिचार, सांप्रदायिकता आदि का विवेचन किया जाएगा। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दर्ज किए जाऍंगे।

छठा अध्याय : आंबेडकरवादी कविताओं का सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में मुल्यांकन

प्रस्तुत अध्याय में आंबेडकरवादी कवियों की अपनी एक विचारधारा है, रहन – सहन, आचार – विचार, भाषा – शैली आदि की दृष्टि से अध्ययन किया जाएगा। अंत में निष्कर्ष दर्ज किए जाऍंगे।

उपसंहारः

प्रस्तुत अध्याय में उपरोक्त सभी अध्यायों के निष्कर्ष को सार रूप में प्रस्तुत किया जाएगा। उपरोक्त अध्यायों में आवश्यकता नुसार परिवर्तन किया जाएगा।

अनुसंधान की पध्दति :–

1) **व्याख्यात्मक पध्दति** के अनुसार कविताओं का अध्ययन किया जाएगा। विशेष सभी कविताओं की व्याख्याएँ की जाऍंगी। व्याख्यात्मक पध्दति के आधार पर प्रत्येक कविता पर आंबेडकरवादी विचारधारा के प्रभाव का अध्ययन किया जाएगा।

2) शास्त्रीय पध्दति :– अनुसंधान के समय शास्त्रीय पध्दति का प्रयोग किया जाएगा। अध्ययन के विवेचन शास्त्रीय पध्दति से किया जाएगा।

3) सर्वेक्षणात्मक पध्दति :– अनुसंधान के विषय का अध्ययन करते समय सर्वेक्षणात्मक पध्दति का भी अवलंब किया जाएगा।

शोधकार्य का विभाजन :–

प्रथम वर्ष – सामग्री संकलन, संदर्भ ग्रंथों का संकलन आदि।

द्वितीय वर्ष – सामग्री के आधारपर टिप्पणियों तैयार करना, प्रस्तुत विषय के संदर्भ में आवश्यक टिप्पणियॉं तैयार करना।

तृतीय वर्ष – निर्धारित अध्यायों के अनुसार लेखन कार्य तथा स्वयं परीक्षण के पश्चात शोधकार्य के अध्ययन को अंतिम रूप देना। शोध प्रबंध का टंकन करके उसे प्रस्तुत करना।

संदर्भ ग्रंथ :–

अ.क्र.	लेखक	कविता संग्रह	प्रकाशन एवं वर्ष
1	मोहनदास नैमिशराय	आग और आंदोलन	बौध्द महासभा, दिल्ली प्रथम संस्करण– 2000
2	सुरजपाल चौहान	क्यों विश्वास करूँ	वाणी प्रकाशन दिल्ली प्र. सं. 2004
3	सं. प्रकाश बच्छव	1 दहकते अंगारे 2 सफेद परछाइयॉ	शारदा प्रकाशन, ठाणे संस्करण– 2002 विजय प्रकाशन, अहमदाबाद संस्करण– 2003
4	डॉ. कर्मशील भारती	कलम को दर्द कहने दो	दलित साहित्य प्रकाशन नई दिल्ली – 2000
5	दामोदर मोरे	1 पलके सुलग रही है 2 नीले शब्दों की छाया में 3 पिछला चक्का 4 सदियों के बहते जख्म	अनुपम प्रकाशन गाजियाबाद प्र.सं. 2002 सौरभ प्रकाशन, दिल्ली 2007 सौरभ प्रकाशन, दिल्ली 2007 अखिल भारतीय साहित्य परिषद , मुम्बई – 2001
6	रजनी तिलक	पद्‌चाप	अल्टरनेटिव द. मी. प्रकाशन दिल्ली प्र. सं. 2002
7	जयप्रकाश कर्दम	तिनका– तिनका आग	सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली – 2004
8	दादूलाल जोशी 'फरहद'	अब न चुभन देते है कॉटे बबूल के	प्रभास प्रकाशन, छत्तीसगड –2004
9	सं. डॉ. विनय कुमार पाठक	दिशाम अतः	नीरज बुक सेन्टर, दिल्ली –2006
10	सं. संतराम देशमुख 'विमल'	दिल पत्थर के बनाये हुए है	पराग प्रकाशन, गाजियाबाद सन 2006
11	ओमप्रकाश वाल्मीकि	बस्स! बहुत हो चुका	वाणी प्रकाशन, दिल्ली प्र. सं. 2007
12	लक्ष्मी नारायण सुधाकर	वामन फिर आ रहा है	नवभारत प्रकाशन, दिल्ली प्र. सं. 2008
13	जसराम हरनोटिया	माटी के पूत	लता साहित्य सदन, गाजियाबाद

			प्र. सं. 2010
14	ईशकुमार गंगानिया	हार नहीं मानूगा	अनिश प्रकाशन, दिल्ली सन 2000
15	सुशीला टाकभौरे	1 हमारे हिस्से का सुरज 2 यह तुम भी जानो 3 स्वाती बूँद और खारे मोती	शरद प्रकाशन, नागपुर 2005 प्र. सं. 2003 प्र. सं. 2000

शोध निर्देशक
डॉ. लक्ष्मण तुळशीराम काळे

शोधछात्र
प्रा. परसराम रामजी रगडे